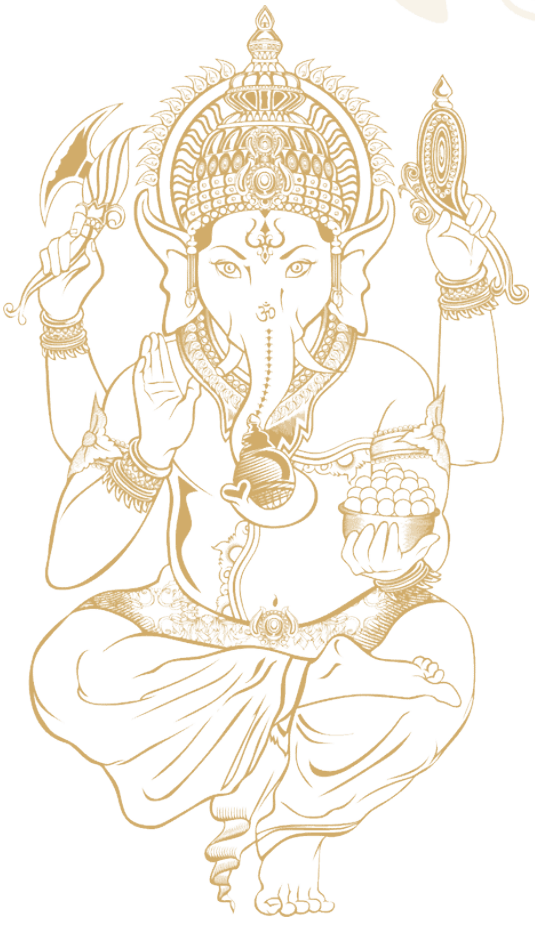

Shubham

Manisha

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121628501

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121628501 Date: 17/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/08/1995	जन्म तिथि	16-17/11/1995
रविवार	दिन	गुरु-शुक्रवार
घंटे 11:31:00	जन्म समय	01:05:00 घंटे
घटी 13:34:34	जन्म समय(घटी)	45:15:55 घटी
India	देश	India
Bikaner	स्थान	Jorhat
28:01:00 उत्तर	अक्षांश	26:45:00 उत्तर
73:22:00 पूर्व	रेखांश	94:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:36:32	स्थानिक संस्कार	00:46:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:05:10	सूर्योदय	05:37:03
19:18:08	सूर्यास्त	16:22:35
23:47:55	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:04

तुला	लग्न	कन्या
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	बुध
कुम्भ	राशि	सिंह
शनि	राशि-स्वामी	सूर्य
पू०भाद्रपद	नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
गुरु	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
3	चरण	1
सुकर्मा	योग	ऐन्द्र
विष्टि	करण	गर
दा-दामोदर	जन्म नामाक्षर	मो-मोहिनी
सिंह	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
शूद्र	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	वनचर
सिंह	योनि	मूषक
मनुष्य	गण	मनुष्य
आद्य	नाड़ी	मध्य
सर्प	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 5वर्ष 1मा 11दि		06:49:29	तुला	लग्न	कन्या	00:15:19	शुक्र 16वर्ष 11मा 24दि	
बुध		26:14:27	कर्क	सूर्य	वृश्चि	00:09:56	चन्द्र	
24/09/2019		29:04:13	कुंभ	चंद्र	सिंह	15:20:39	10/11/2018	
23/09/2036		20:05:42	कन्या	मंगल	वृश्चि	25:51:46	10/11/2028	
बुध	20/02/2022	11:55:58	सिंह	बुध	तुला	26:26:11	चन्द्र	11/09/2019
केतु	17/02/2023	11:54:08	वृश्चि	गुरु	वृश्चि	25:30:49	मंगल	11/04/2020
शुक्र	18/12/2025	24:06:23	कर्क	शुक्र	वृश्चि	22:50:51	राहु	11/10/2021
सूर्य	24/10/2026	29:48:49	कुंभ व	शनि व	कुंभ	24:13:00	गुरु	10/02/2023
चन्द्र	25/03/2028	05:05:08	तुला व	राहु	तुला	02:22:59	शनि	10/09/2024
मंगल	22/03/2029	05:05:08	मेष व	केतु	मेष	02:22:59	बुध	09/02/2026
राहु	09/10/2031	03:49:30	मक व	हर्ष	मक	03:26:14	केतु	10/09/2026
गुरु	14/01/2034	29:39:54	धनु व	नेप	धनु	29:28:19	शुक्र	11/05/2028
शनि	23/09/2036	04:01:26	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	06:26:09	सूर्य	10/11/2028

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:47:55 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:04

लग्न-चलित

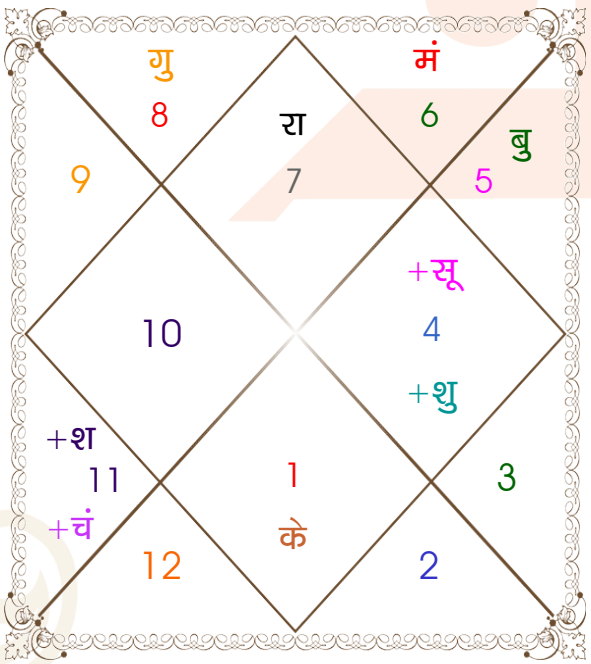

लग्न-चलित

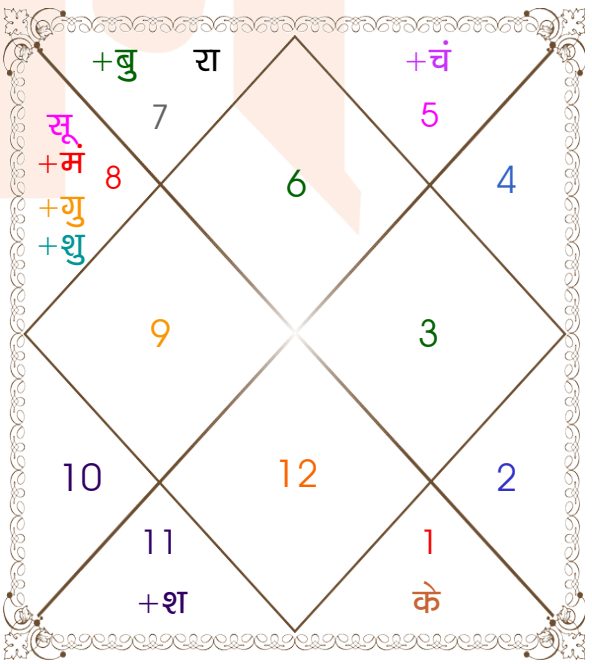

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	सूर्य	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

कुल : **24.5 / 36**

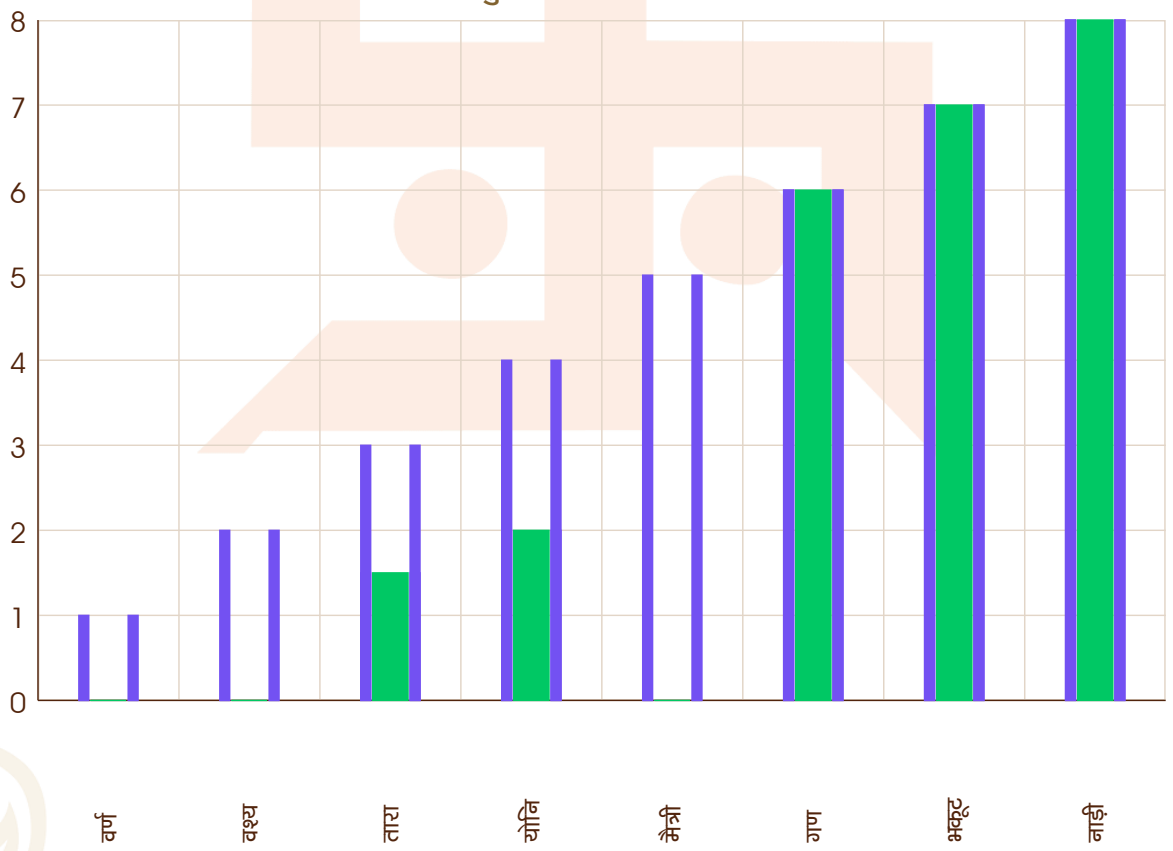

अष्टकूट मिलान

ॅनइींउ का वर्ग सर्प है तथा डंदर्पी का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारॅनइींउ और डंदर्पी का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ॅनइींउ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ॅनइींउ कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डंदर्पी मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डंदर्पी कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ॅनइींउ तथा डंदर्पी में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ौनईंउ का वर्ण शूद्र है तथा डंदपीं का वर्ण क्षत्रिय है। इसमें डंदपीं का वर्णौनईंउ के वर्ण से नीचा नहीं है अतः यह मिलान उत्तम मिलान नहीं है। जिसके कारण डंदपीं अति वर्चस्वशाली होगी तथा सिर्फ आज्ञा देने वाली होगी। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं तर्क-वितर्क का दौर चलता रह सकता है तथा दोनों के बीच कभी-कभी मार-पीट भी हो सकती है। डंदपीं का आक्रामक व्यवहार परिवार के सभी सदस्यों का जीना दूभर कर सकता है। परिवार में सुख-शान्ति की स्थापना के लिएौनईंउ को उसकी हर बात माननी होगी तथा गुलाम की भाँति रहना पड़ेगा।

वश्य

ौनईंउ का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं डंदपीं का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है अतः यह मिलान बहुत अशुभ मिलान है। शेर हमेशा मनुष्य के लिए संकट उपस्थित करता है। ये मनुष्य को हानि पहुंचाता है तथा घायल करते हैं व कभी-कभी मारकर खा भी जाते हैं। अतः यह मिलान उचित नहीं है क्योंकिौनईंउ हमेशा डंदपीं से भय महसूस करेगा। डंदपीं हमेशाौनईंउ पर हावी रहेगी, पति के ऊपर वर्चस्व स्थापित करेगी तथा अपने पति को अपनी हर आज्ञा के लिए बाध्य करेगी जो स्वीकार करने योग्य नहीं है क्योंकि इससे विकास एवं समृद्धि प्रभावित होगी। डंदपीं हमेशा कोई न कोई समस्या उत्पन्न करती रहेगी जिससे घर एवं परिवार की शांति भंग होगी।

तारा

ौनईंउ की तारा साधक तथा डंदपीं की तारा प्रत्यरि है। डंदपीं की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। संभाव है कि यह विवाहौनईंउ एवं उसके परिवार के लिए हानिकारक साबित हो। डंदपीं का स्वभाव बिल्कुल लापरवाह, स्वार्थी एवं असहयोग की भावना वाली हो सकती है तथा भविष्य मे अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही लगी रह सकती है। साथ ही डंदपीं के अवैध संबंध तक भी हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप पति, बच्चों एवं संपूर्ण परिवार को काफी कष्ट एवं पीड़ा का सामना कर पड़ सकता है।ौनईंउ अत्यधिक आध्यात्मिक हो सकता है तथा अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक गतिविधियों में ही व्यतीत करता रहेगा।

योनि

ौनईंउ की योनि सिंह है तथा डंदपीं की योनि मूषक है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच

अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ौनईींउ एवं डंदर्पी दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण ौनईींउ एवं डंदर्पी के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी ौनईींउ दवं डंदर्पी को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

ौनईींउ का गण मनुष्य तथा डंदर्पी का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

ौनईींउ एवं डंदर्पी की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ

है तथा ौनईंउ व डंदर्पी को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

ौनईंउ की नाड़ी आद्य है तथा डंदर्पी की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का मिलान अति उत्तम माना जाता है क्योंकि इसमें जीवन के तीन आवश्यक घटकों में से दो वात एवं पित्त का समन्वय है। जीवन के अस्तित्व के लिए वात एवं पित्त का समन्वय आवश्यक है। जिसके कारण आपकी संतान काफी बुद्धिमान, स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़ एवं सौभाग्यशाली होंगी। जो भौतिकवादी विश्व में सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

मेलापक फलित

स्वभाव

ौनईंउ की जन्मराशि वायुतत्व युक्त कुम्भ तथा डंदपेीं की जन्मराशि अग्नितत्व युक्त सिंह है। वायु एवं अग्नि तत्व में नैसर्गिक समता होने के कारणौनईंउ और डंदपेीं के मध्य विषमताओं के साथ साथ स्वभावगत समानताएं भी विद्यमान होंगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता होगी जिससे मिलान सामान्यतया अच्छा रहेगा।

ौनईंउ की राशि का स्वामी शनि तथा डंदपेीं की राशि का स्वामी सूर्य परस्पर शत्रु राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य परस्पर संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति तथा सहयोग भी अल्प ही रहेगा। फलतः परस्पर सुख दुख में सहयोग कम ही प्रदान करेंगे। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे तथा आपस में आलोचनात्मक दृष्टि कोण भी रहेगा जिससे वैवाहिक जीवन में प्रतिकूलता रहेगी।

ौनईंउ एवं डंदपेीं की राशियां परस्पर सप्तम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही आपस में प्रेम एवं सदभावना की भी वृद्धि रहेगी एवं सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर होंगे। इस प्रकार यदिौनईंउ और डंदपेीं बुद्धिमता तथा सामंजस्य से कार्य करें तो जीवन में शुभता आ सकती है।

ौनईंउ का वश्य मानव तथा डंदपेीं का वश्य वनचर है। मानव एवं वनचर में नैसर्गिक शत्रुता तथा विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में विषमता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी अलग अलग रहेंगी। फलतः कामसंबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

ौनईंउ का वर्ण शूद्र तथा डंदपेीं का वर्ण क्षत्रिय है अतः इनकी कार्य क्षमताएं भी असमान रहेंगी।ौनईंउ किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम से करने में तत्पर रहेंगी परन्तु डंदपेीं की प्रवृति साहसिक एवं पराक्रमी कार्यो को करने में रहेगी। अतः यदा कदा असंतोष का भाव भी परस्पर रहेगा।

धन

ौनईंउ और डंदपेीं की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिनौनईंउ पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसकेअतिरिक्तौनईंउ की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी

जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

ौनइींउ का आद्य तथा डंदर्पी की मध्य नाड़ी में जन्म हुआ है। अतः नाड़ी दोष का इन पर कोई प्रभाव नहीं होगा लेकिन मंगल के दुष्प्रभाव से डंदर्पी को समय समय पर स्वास्थ्य संबधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से साथ ही गुप्त रोग या अन्य रक्त अथवा पित संबधी परेशानियां समय समय पर उत्पन्न होंगी। इसके अतिरिक्त मासिक धर्म की अनियमिता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए डंदर्पी को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि सेौनइींउ और डंदर्पी का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्तौनइींउ और डंदर्पी के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डंदर्पी के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डंदर्पी को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डंदर्पी को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष सेौनइींउ और डंदर्पी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकारौनइींउ और डंदर्पी का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डंदर्पी के अपनी सास से संबधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ से डंदर्पी किसी भी अनावश्यक समस्या या असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। डंदर्पी के हृदय में उनके प्रति सेवा भाव रहेगा तथा अपनी सेवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्यपि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा सामान्यतया संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके ससुर से डंदर्पी को विशेष स्नेह सम्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी

तथा के द्वारा डंदर्पी को समय समय पर समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों से डंदर्पी के अत्यंत ही स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण संबध रहेंगे तथा उनसे इन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी समस्याओं तथा सुख दुख में एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इस प्रकार डंदर्पी के सास ससुर का दृष्टिकोण सामान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

ससुराल-श्री

ौनईींउ के सास के साथ सामान्यतया अच्छे ही संबध रहेंगे तथा उनके प्रति इनके मन में सम्मान तथा आदर का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। सास को वह माता के समान समझेंगे तथा वह भी उन्हें पुत्रवत स्नेह तथा सहयोग प्रदान करेंगी । साथ हीौनईींउ भी समय समय पर ससुराल में आते जाते रहेंगे तथा आपस में श्रेष्ठता के भाव की हमेशा न्यूनता रहेगी।

लेकिन ससुर के साथ में सामान्यतया संबधों में तनाव रहेगा तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण वैचारिक मतभेद भी रहेंगे परन्तु यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति का अनुपालन करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भीौनईींउ के संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की न्यूनता रहेगी एवं प्रतिद्वन्दिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोणौनईींउ के प्रति विशेष उल्लेखनीय नहीं रहेगा।